Basic Health Care Services

कहानियां उनकी, जिन्होंने लाखों जीवन बदल दिए : अमृत क्लीनिक की महिला नर्सें

विवरणीका

क्र.सं.	विवरण	पेज नं.
1	प्रस्तावना	1
2	पहाड़ पर बकरियां चराते हुए नर्स बनने का सपना देखा, चिमनी की रोशनी में पढ़ाई की, अब लोगों की जान बचा रही है हंसा	3
3	उर्मिला ने संघर्ष में सीखीं वो सारी खूबियां जो एक नर्स में होनी चाहिए	4
4	मेहनत और लगन से छोटी सी उम्र में हर्षिता ने बुलंदियों को छू लिया	5
5	सबके साथ एडजस्ट करना, हमेशा मुस्कुराना, मीरा का मूलमंत्र है	6
6	तू न थकेगा कभी, तू न रुकेगा कभी, तू न मुड़ेगा कभीः मिलिए अमृत नर्स सरीता महिड़ा से	7
7	समय के साथ जिसकी चमक बढ़ती जाती है, राधा उसी का नाम है	8
8	पैदल स्कूल जाना, लौटकर बकरियों को चराना, सोचा न था कि नर्स बनकर सेवा करुंगीः राधा मीणा	9
9	खेतों में गोबर डालते रहे पर पढ़ाई नहीं छोड़ी इसलिए आज नर्स हूं : वीना रोत	10

प्रस्तावना

फ्लोरेंस नाइटिंगेल की कहानी को हम सब जानते हैं। यह एक संयोग है कि उनके नाम के अक्षरों को अगर पुर्नव्यवस्थित किया जाए तो वह बन जाता है– ''आगे बढ़ती रहो खुशियां बांटने वाली परी।'' फ्लोरेंस नाइटिंगेल की कहानी मैंने स्कूल में पढ़ी थी। उस कहानी की याद मुझे दुबारा आई, जब मैंने अमृत क्लीनिक में काम कर रही नर्सों के साथ काम करना शुरू किया। पहली बार जब आप इनसे मिलेंगे, तो इनमें से बहुत सी नर्स आपको कम बोलने वाली, थोड़ी शर्मीली लगेंगी। लेकिन जब ये किसी बीमार महिला, पुरूष या बच्चे को देखती हैं तो यह बदल जाती हैं। इनका आत्मविश्वास और साहस देखते ही बनता है। पिछले आठ सालों में ऐसे अनगिनत अवसर आए हैं, जब हमारी नर्स के प्रयत्न से गंभीर बीमारी से ग्रसित मरीज ठीक होकर अपने घर लौट गए है। कई बार ऐसी भी स्थिति आई जहां मरीज का बचना मुश्किल लग रहा था, लेकिन नर्सों की मेहनत की वजह से वे ठीक हो गए।

कौन हैं ये नर्स महिलाएं, कहां से इनमें इतनी शक्ति आती है, इनकी कहानी को हम सबके सामने आना जरूरी है। यह काम हबीब ने बहुत सुंदरता से किया है। इस काम की शुरूआत एक वर्ष पहले ही हो गई थी। कोविड–19 ने इस काम को धीमा जरूर कर दिया, लेकिन बंद नहीं। बेसिक हेल्थ सर्विसेस से प्रणोती ने इस महत्वपूर्ण कार्य को संभालकर रखा और सुनिश्चित किया कि यह काम अपने अंजाम तक पहुंचे और आप–हम यह कहानियां पढ़ सकें। हबीब और प्रणोती को बहुत धन्यवाद।

पिछले वर्ष में इनमें से कुछ नर्स अमृत क्लीनिक छोड़कर सरकारी नौकरी से जुड़ गई हैं। हमें विश्वास है कि वहां भी वो उतनी ही मेहनत और संवेदनशीलता से अपने काम में जुटी होंगी। यह कहानियां अमृत में कार्यरत नर्स की तो हैं ही, साथ ही ये उन हजारों, लाखों नर्स की भी हैं जो भारत के विभिन्न राज्यों में, अलग–अलग गांवों में बिना शोर किए वह कर रही हैं जो शायद वो अकेली ही कर सकती हैं– लोगों, विशेषकर महिला एवं बच्चों को, स्वस्थ रखना एवं उनकी जान बचाना। उन सब नर्सों को यह संकलन समर्पित है।

आपका कहानी पढ़ना शुभ हो!

- डॉ. संजना ब्रह्मावर मोहन,
निदेशक, बेसिक हेल्थकेयर सर्विसेज़

आदिवासी इलाकों में नर्स का काम कर पाना बहुत बड़ी बात है। महिलाओं के विषय में हम देखते हैं कि उनके पास अवसर की कमी है जिसमें शिक्षा एक प्राथमिक अवसर है जिसको हासिल करना उनके लिए इतना आसान नहीं है। इन परिस्थितियों के पीछे हम कारण देखें तो कई कारण हैं जिससे लड़कियों की शिक्षा प्रभावित होती है, और ये सब संघर्ष करके शिक्षा ग्रहण कर लें तो उन्हें कोई नहीं रोक सकता है। परन्तु कई सामाजिक मापदंड, बंधन, नियमों के कारण उनको आगे बढ़ने में बाधा आती है, और इन सब बाधा को पार करने के लिए महिला में आत्मविश्वास का होना आवश्यक है।

इस संकलन ने हमें नर्स के जीवन को दिखाया है। नर्सों के आगे बढ़ने में उनकी मेहनत, लगन, लीडरशिप का जज़्बा बहुत ही मायने रखता है। जो नर्स कई बाधाओं को पार कर इस जगह पहुंच पाई है यह इनके लिए बहुत ही बड़ी कामयाबी है क्योंकि आदिवासी समाज में महिलाओं का औपचारिक कार्य के क्षेत्र में आना ही कम है।

इन आदिवासी इलाकों में नर्सों की अभी एक छोटी संख्या है परन्तु इनके हौंसले ओर उत्साह को देखकर कई और महिला नर्स तैयार होगी।

- मंजू राजपुत
परिवार सशक्तिकरण कार्यक्रम,
आजीविका ब्यूरो

मुझे नर्सेज के कामकाज के बारे में बहुत ज्यादा जानकारी नहीं थी। जब भी नर्स का नाम आता है हम यही कल्पना करते हैं कि सफेद यूनिफार्म में बीमार लोगों के इंजेक्शन लगाने वाली, चोट लग जाए या फोड़ा पक जाए तो पट्टी बांधने का काम करने वाली, एक महिला जो बेहद मिलनसार है और लोगों की सेवा करती है। बेसिक हेल्थ केयर सर्विसेज़ के अमृत क्लीनिक में काम करने वाली नर्सों का इंटरव्यू करने का मौका मिला और नर्सों की कहानियां सुनीं तो नर्सिंग पेशे के प्रति सम्मान कहीं ज्यादा बढ़ गया। कोराना महामारी ने इस पेशे को समाज में और इज्जत दी। जैसे साहित्य और पत्रकारिता एक दूसरे के पूरक हैं, वैसे ही स्वास्थ्य सेवाओं में डॉक्टर और नर्स भी एक दूसरे के पूरक हैं और अस्पतालों में किसी एक के बिना काम नहीं चल सकता है। एक समय था, जब सरकारी अस्पतालों में ज्यादातर नर्सें केरल या दक्षिण भारत की होती थीं, लेकिन अब स्थानीय लोगों ने भी इस पेशे को

समझा और जरूरत महसूस की। उदयपुर में ही नहीं बल्कि देश दुनिया में आदिवासी क्षेत्रों की महिला नर्सें लोगों की सेवा कर रही हैं।

बात करते हैं अमृत क्लीनिक में काम करने वाली नर्सों की। यहां काम करने वाली महिला नर्सें अपने पेशे और लोगों की सेवा के लिए 100 प्रतिशत समर्पित है। शहर के बड़े अस्पतालों में हमने नर्सों को डॉक्टरों के निर्देशों की पालना करते हुए ही देखा है, लेकिन उदयपुर जिले के आदिवासी बाहुल्य दूरदराज के इलाकों में ये नर्सें लोगों के लिए ईश्वर से कम नहीं हैं। ये महिला नर्सें बीमारों का इलाज तो करती ही हैं, उनकी सेवा के साथ मौजूदा हालात में जिंदगी जीने के तरीके भी सिखा देती हैं। अमृत क्लीनिक से जुड़ीं नर्सें हर पल बीमार, बूढ़ों, बच्चों की सेवा करने के लिए तत्पर रहती हैं। इन नर्सों का काम है–मरीज की बीमारी का पता लगाना, दवाई देना, दुबारा क्लीनिक पर बुलाना, नहीं आने पर कई किलोमीटर पैदल चलकर उनके घर जाना, समझाइश करना और उनकी जिंदगी बचाना। ऐसा काम वो ही लोग कर सकते हैं जो सेवा को शिद्दत के साथ जीते हैं।

एक कुशल नर्स बनने के लिए सिर्फ त्याग की भावना होना ही काफी नहीं है। अच्छी नर्स बनने के लिए अच्छी ट्रेनिंग और काफी तजुर्बा होना भी जरूरी है और यह सबकुछ अमृत क्लीनिक से जुड़ी नर्सों में है। सालों काम करने के बाद भी उनमें सीखने की ललक कम नहीं हैं। मेडिकल पेचीदगियों में जब भी उलझती है तो बेसिक हेल्थकेयर सर्विसेज़ के डॉक्टरों से सलाह लेती हैं। इस तरह इन नर्सों ने कई लोगों की जान बचाई है। मैंने कुछ उदाहरण इस तरह के भी देखे और सुने हैं कि ग्रामीण इलाकों के लोगों को शहरी अस्पतालों से ज्यादा इन नर्सों पर भरोसा है, रेफर करने के बाद भी बीमार के परिवार वाले उन्हें बड़े या शहरी अस्पतालों में ले जाने को तैयार नहीं होते हैं। इन नर्सों को जब यह पता चलता है कि बीमार या मरीज की जान बचाने के लिए उन्हें रेफर करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है तो वे परिवार वालों को समझाती हैं। अपने प्रयासों से एम्बुलेंस या अन्य निजी वाहन बुलवाकर बीमार को रेफर करती हैं। सच में ये नर्सें भगवान का ही रूप हैं। इन नर्सों के संघर्ष और सेवा के जज्बे की कहानियां पढ़कर और भी लोग प्रेरित होंगे।

- सय्यद हबीब
वरिष्ठ पत्रकार

पहाड़ पर बकरियां चराते हुए नर्स बनने का सपना देखा, चिमनी की रोशनी में पढ़ाई की, अब लोगों की जान बचा रही है हंसा

घटेड़ अमृत क्लीनिक में काम कर रही नर्स हंसा डिंडोर की कहानी किसी फिल्म से कम नहीं है। डूंगरपुर जिले के मछेड़िया खास गांव में संयुक्त परिवार में रहने वाली हंसा की जिंदगी में बचपन से ही संघर्ष शुरू हो गया था। स्कूल जाने से पहले बकरी चराना, पानी भर कर लाना, गायों को चारा डालना और रात में चिमनी जलाकर पढ़ाई करना। माता–पिता मजदूरी पर जाते और हंसा घर को संभालती। दसवीं पास की तो घर वालों ने शादी की तैयारी कर डाली। पढ़ाई छोड़ी तो स्कूल के टीचर्स ने फीस भरकर स्कूल भेजा। उन्होंने पिता शंकरलाल डिंडोर को समझाया तो वो भी बेटी को पढ़ाने के लिए राज़ी हुए। बारहवीं अच्छे नंबरों से पास की, फिर हंसा को साइंस मिल गई। सरकार ने स्कूटी दी तो गांव में हंसा का मान बढ़ गया।

हंसा बताती है– उसके पिता एक बार जब अस्पताल गए तो वहाँ कम्पाउंडर ने उन्हें नर्सिंग कोर्स और उसके फायदे बताए, वहीं से उन्होंने मुझे नर्स बनाने की ठानी और फार्म भरकर ही घर लौटे। काउंसलिंग में जब जयपुर गई तो मुझे सड़क पार करना भी नहीं आता था। काउंसलिंग के बाद उदयपुर के सनराइज नर्सिंग कॉलेज में मेरा एडमिशन हो गया। कॉलेज में जो पढ़ाते वह पढ़ लेती। बाकी समय हॉस्टल में ही बीतता। कोर्स पूरा करने के बाद एनजीओ के एक अस्पताल में नौकरी मिल गई। फिर बीमारी के कारण नौकरी छोड़नी पड़ी। चार साल पहले अमृत क्लीनिक में इंटरव्यू दिया तो सलेक्शन हो गया। सही मायने में यहीं पर प्रैक्टिल ट्रेनिंग हुई और नर्सिंग गुर सीखे। आज मैं क्लिनिकल नर्स बन गई हूं।

हंसा ने नर्सिंग पेशे के अपने अनुभव बताए ''जब उसके हाथ पैर फूल गए'' : कान्ता* बाई नाम की साठ वर्षीय महिला को उसकी बहू टेम्पो में लेकर आई। वो बेहोशी की हालत में थी। हाई ब्लड प्रेशर था, 240–210। बहू तो सास को मरा हुआ समझ चिल्लाकर रोने लगी। मैंने फोन पर हमारे डॉक्टर से बात की और उन्होंने मुझे गाइड किया। मैंने कान्ता को दवाई दी, इंजेक्शन लगाया, तब जाकर उसे होश आया, लेकिन उसकी हालत खतरे से बाहर नहीं थी। गांव के लोग इकट्ठा हो गए। मैंने फिर एम्बुलेंस बुलवाई और उसको उदयपुर रेफर किया। अब वो बिल्कुल ठीक है, जब भी आती है, मुझे दुआएं देती है।

इसी तरह पेमली* नाम की एक गर्भवती महिला को उसके घर वाले खाट पर लेकर आए। सात माह का गर्भ था, लेकिन पेमली का वजन मात्र 28 किलो ही था। अचानक उसे तान आ गई, शरीर कड़क हो गया। मैंने उनको रेफर का कहा, लेकिन घर वाले तैयार नहीं हुए। मैंने हमारे डॉक्टर से बातचीत की, उन्होंने गाइड किया। पेमली को मरा हुआ बच्चा पैदा हुआ, लेकिन उसकी जान बच गई।

बेसिक हेल्थकेयर सर्विसेज़ में कार्यरत अर्पिता का कहना है कि हंसा पूरी शिद्दत के साथ अपना काम करती है। इतने साल काम करने के बावजूद उनकी सीखने की ललक कम नहीं हुई है। उनका मकसद मरीजों को राहत दिलवाना रहता है व उन्हें बेहतर दवाई देने से लेकर ज़रुरत पड़ने पर रेफर करवाने तक वो कोई कसर बाकी नहीं रखती। मरीजों के हित में उन्हें कई बार डॉक्टरों से भी बहस करनी पड़ जाती है, लेकिन वो पीछे नहीं हटती। यही वजह है कि वे मरीजों के लिए एक अच्छी दोस्त भी हैं।

हंसा बताती हैं कि उन्हें खाली समय में किताबें पढ़ना बहुत पसंद है। वे बचपन में पढ़ाई से दूर रहने की कमी को पूरा करना चाहती हैं। ''इससे ज्यादा मुझे अपने पेशेंट की सेवा करना पसंद है और इसके लिए मैं पूरी कोशिश करती हूं।'' उनका लक्ष्य है सरकारी अस्पताल में जॉब करना। वो कहती हैं–आगे वो पोस्ट बीएससी व एमएससी करके नर्सिंग के कॅरियर को और आगे ले जाना चाहती हैं।

*व्यक्ति की गोपनीयता रखने के लिए नाम बदला गया है।

उर्मिला ने संघर्ष में सीखीं वो सारी खूबियां जो एक नर्स में होनी चाहिए

घटेड़ अमृत क्लीनिक में लोगों का इलाज कर रही उर्मिला कलासुआ में वो सब खूबियां हैं जो एक नर्स में होनी चाहिए। मरीज के दर्द और तकलीफों को समझने की काबिलियत, बीमार लोगों के साथ अपनापन और धीरज से पेश आना, त्याग और मदद करना, सभी गुर वो अच्छे से जानती है। डूंगरपुर जिले के मुंगेड़ा गांव की रहने वाली उर्मिला ने अपने घर के पास स्थित स्कूल से ही पढ़ाई शुरू की। दो बड़ी बहनों ने आठवीं तक पढ़ाई की और 15 साल की उम्र में उनकी शादी हो गई, पर खुद ने पढ़ाई को ही तरजीह दी।

उर्मिला बताती हैं–मैं पढ़ने के लिए मासी के घर चली गई, लेकिन पढ़ाई नहीं छोड़ी। मेरे बड़े पापा की लड़की ने बारहवीं कक्षा पास की। घर वालों ने उसे सिर आंखों पर बैठा दिया, तब मैंने भी सोच लिया कि बारहवीं तक पढ़ाई करनी ही है। स्कूल चार किमी दूर था, लेकिन दौड़ते हुए जाते और दौड़ते हुए लौट आते। पता ही नहीं चलता कितना सफर तय किया, एक जुनून था। दसवीं में गई तो घर वालों ने सगाई कर दी। दसवीं पास हुई तो सगाई टूट गई। लड़का उम्र में मुझसे बड़ा था, मैंने खुद ही मना कर दिया। डूंगरपुर में कॉलेज में एडमिशन ले लिया। शहर में अपने भाई की गार्जियन भी थी और पढ़ाई भी करती। फिर एक दिन मकान मालिक ने नर्सिंग के लिए काउंसलिंग शुरू की, तब तक मुझे उस बारे में कुछ जानकारी नहीं थी। मां के जेवर गिरवी रखकर फीस जमा करवाई। मजदूरी करके किताब कॉपियां खरीदी। एक साल बाद नर्सिंग कॉलेज को लेकर विवाद हो गया और मुझे घर बैठना पड़ा। हमने आंदोलन किया तो पता चला कि मेरा एडमिशन रतलाम के किसी कॉलेज में कर दिया गया है। मैं वहां गई और नर्सिंग का कोर्स किया।

नर्सिंग पेशे के अनुभव ऐसे बताती हैं उर्मिला–नर्सिंग कोर्स करने के बाद ट्रेनिंग भी ली, लेकिन मैंने कभी टांके नहीं लगाए थे। एक दिन मैं क्लिनिक पर अकेली थी। रमेश* नाम का एक युवक अपनी वाइफ को लेकर आया, जो बाइक से गिर गई थी, उसके सिर से खून बह रहा था। मैंने उसके घाव को साफ तो कर दिया पर टांके लेने में मुझे परेशानी हो रही थी। मैंने धीरज रखा और हमारे डॉक्टर से फोन पर बातचीत की। मैंने सोच लिया था कि मुझे इसकी जान बचानी है तो खून तो रोकना ही होगा। मैंने हिम्मत नहीं हारी, सिर के बाल काटे, सफाई की ओर टांके लगाकर खून को रोक दिया।

जब मैंने एक महिला के अंधविश्वास को तोड़ा– उर्मिला बताती हैं कि एक बार जब मैं गोगुंदा में काम कर रही थी, तब एक साल का बच्चा जो गंभीर मलेरिया से पीड़ित था, मुझे रोड पर मिला। मां उसे इलाज के लिए भोपे के यहां ले जा रही थी। मैंने उससे बीमारी का पूछा तो बोलीं–डाकन मेरे कितने बच्चों को खाएगी। मैंने समझाया कोई डाकन नहीं है, इसको मलेरिया है। बच्चा अतिकुपोषित भी था। इससे पहले उसके और भी बच्चे मर चुके थे। वो रो रही थी। मैंने समझाकर बच्चे का इलाज शुरू किया। कुछ ही दिनों में बच्चा ठीक हो गया। अब भी वो मुझे दुआएं देती है। सोचिए आप इस पेशे में कितनी दुआएं मिलती हैं।

बेसिक हेल्थकेयर सर्विसेज़ में कार्यरत डॉ. गार्गी गोयल का कहना है कि उर्मिला एक टीम वर्कर है। वह टीम के अन्य सदस्यों के साथ बहुत जल्द घुल–मिल जाती है जिससे अन्य सदस्य बहुत सहज महसूस करते हैं और कार्य–स्थल का माहौल सौहार्दपूर्ण बना रहता है। उर्मिला को बच्चों से भी अत्यधिक प्रेम है। क्लीनिक पर आने वाले बच्चों को बहुत प्यार से देखती है और खेल–खेल में उनकी जाँच और इलाज कर देती है। उर्मिला में निरंतरता और धीरज भी बहुत है। वह अपने काम को आनंदपूर्वक भी करती है। कई पारिवारिक उलझनों के बावजूद वह अपना संतुलन बनाए रखने में सक्षम है। वह दूसरों की सेवा में विश्वास रखती है। इन सबके साथ वह खुद की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहती है। उसे पढ़ने का भी शौक है और घूमने का भी।

उर्मिला बताती हैं कि काम करते रहना ही उसका शौक है। वो घर पर रहती है तो घर का और क्लिनिक पर रहती है तो क्लिनिक का काम करती है। आराम पसंद नहीं है। आने वाले समय में वो सरकारी नौकरी पाना चाहती हैं। साथ ही आगे पढ़ाई भी करना चाहती है।

*व्यक्ति की गोपनीयता रखने के लिए नाम बदला गया है।

मेहनत और लगन से छोटी सी उम्र में हर्षिता ने बुलंदियों को छू लिया

मानपुर अमृत क्लीनिक में मरीजों का इलाज करने वाली हर्षिता जैन एक बहुत ही काबिल नर्स है। बीमारी और इलाज करते वक्त तमाम नई बातें सीखने की लगन उनमें देखी जा सकती है। वो अपने पेशे में माहिर है इसलिए वो एक सर्वश्रेष्ठ क्लिनिकल नर्स के रूप में मानी जाती है। सलूंबर के जाँबूड़ा गांव में रहने वाली हर्षिता जैन ने आठवीं तक गांव में ही पढ़ाई की, लेकिन 9वीं से बारहवीं तक सलूंबर के स्कूल में पढ़ी। सुबह 7 बजे स्कूल पहुंचने के लिए सर्दी, गर्मी या बारिश हो उसे सुबह साढ़े पांच या छह बजे घर से निकलना पड़ता था। आज भी वही संघर्ष जारी है।

हर्षिता बताती हैं–मैंने बीए फर्स्ट ईयर में एडमिशन लिया था तभी नर्सिंग की वैकेंसी निकली। मैंने भी आवेदन कर दिया था क्योंकि मेरी बड़ी बहन पहले से ही उदयपुर से नर्सिंग कर रही थीं। मैंने उदयपुर में नर्सिंग कॉलेज में एडमिशन लिया। कोर्स पूरा होने के बाद मैंने पहला जॉब अमृत क्लीनिक से शुरू किया। घटेड़ में ट्रेनिंग पूरी करने के बाद मुझे मानपुर लगाया गया। यहां ट्रेनिंग में नर्स के कामकाज के अलावा मैंने लोगों से बातचीत करना, मीटिंग लेना, काउंसलिंग जैसे काम को बेहतर तरीके से सीखा। पहले मुझे इन सब काम में डर लगता था जो अब नहीं लगता है।

हर्षिता ने अपने काम के अनुभव भी हमारे साथ साझा किए। हर्षिता बताती हैं–एक दिन फील्ड में हम पास के गाँव लोहागढ़ गए। वहाँ थावरा* नाम का शख्स आग के पास बैठा था, उसे टीबी थी। उसका वजन काफी काम था। वो चलने की हालत में नहीं था। अस्पताल जाने को तैयार नहीं था, मैंने उसे समझाया तो वो अस्पताल जाने को राजी हो गया। हमने 108 एम्बुलेंस बुलाई, सलूंबर भेजा, जहां उसका प्राथमिक उपचार किया और अगले दिन उदयपुर रेफर कर दिया। जब वापस आया तो हमने कई बार उसकी होम विजिट की, एवं दवा भी घर पहुँचाई। अब वो पूरी तरह स्वस्थ है। वजन भी 35 से बढ़कर 50 किलो हो गया है।

एक बार एक अविवाहित लड़की की प्रेगेंनेंसी रुक गई। घर वाले यह मानने को तैयार नहीं थे, जब हमने सोनोग्राफी करवाई तो पता चला। मेल हेल्थ वर्कर ने परिवार वालों को बताया। वो रेफर के लिए भी राजी नहीं हुए। उस लड़की को दर्द चालू हुए, और उसने मरे हुए बच्चे को जन्म दिया। लेकिन प्लेसेंटा आउट नहीं हुआ। मैंने हमारे डॉक्टर को फोन कर गाइडेंस ली, इसके बाद प्लेसेंटा को आउट किया। तब मैंने राहत की सांस ली।

डॉ संजना जिन्होंने हर्षिता के साथ लंबे समय तक काम किया है, बताती हैं कि हर्षिता बहुत ही मासूम और बच्ची सी दिखने वाली है। मगर उसका काम उतना ही बेहतर है। एक वक्त ऐसा आया जब हमारे यहां दस में से पांच नर्सेज का गवर्मेंट में सलेक्शन हो गया। हर्षिता अकेली ने एक महीने तक क्लिनिक को संभाला। आने वाले हर महिला, पुरुष, बच्चे का अच्छे से इलाज किया। वो बताती हैं कि हर्षिता हर बीमारी के प्रॉटोकॉल को बेहतर समझने वाली है। मलेरिया जैसी बीमारी में मरीज का शुगर लेवल कम हो जाता है, यह बात कई डॉक्टर्स को भी मालूम नहीं है, लेकिन हर्षिता यह भलीभांति जानती है। डॉक्टर से सलाह लेने से पहले मरीज की वो सभी जांचें कर लेती है जो जरूरी है। ऐसे में डॉक्टर को भी अधिक सलाह देने की ज़रुरत नहीं पड़ती है।

हर्षिता बताती हैं–मुझे खाली समय में अच्छा खाना बनाना बहुत पसंद है और मैं जब भी फ्री होती हूं, खाना जरूर बनाती हूं। ज़रुरत पड़ने पर मैं अपने पेशेंट के लिए भी खाना बना सकती हूं।

हर्षिता का लक्ष्य है कि मरीजों को अच्छे से सेवा करें। साथ ही और पढ़कर पोस्ट बीएससी करके वे और आगे बढ़ना चाहती हैं।

*व्यक्ति की गोपनीयता रखने के लिए नाम बदला गया है।

सबके साथ एडजस्ट करना, हमेशा मुस्कुराना, मीरा का मूलमंत्र है

बेड़ावल अमृत क्लीनिक पर कार्यरत नर्स मीरा डामोर को अपनी पढ़ाई को पूरी करने के लिये काफी संघर्ष करना पड़ा। पीपलखूंट गांव की रहने वाली मीरा की मां जीवनी देवी हाउस वाइफ है, और पिता कानजी डामोर खेतीबाड़ी करते हैं। बचपन में घर के आर्थिक हालात बहुत अच्छे नहीं थे। मीरां बताती हैं– परिवार के संघर्ष के दिनों में चार भाई बहनों ने बचपन में खूब काम किया। भाई बाहर जाते और हम भी मजदूरी करते थे। मैं जब पहली से पांचवीं क्लास में थी, स्कूल दो किमी दूर था। पैदल आना जाना, लौटकर घर का काम करना। छुट्टी के दिन मजदूरी करना। दसवीं तक यह सिलसिला चलता रहा। जब भाई की पुलिस की नौकरी लग गई, तब से अच्छे दिनों की शुरुआत हुई। बुआ नर्स थी, लोगों की सेवा करती थी, मैंने भी सोच लिया था कि मैं भी इसी तरह सेवा का काम करूंगी। एएनएम बनने की सोच रही थी, तभी नर्सिंग कॉलेज में एडमिशन हो गया। भाई ने फीस अदा करने में मदद की। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। साढ़े तीन साल पढ़ाई के कब निकल गए, पता ही नहीं चला। ट्रेनिंग पूरी करने के बाद शहरी अस्पताल में काम किया। लेकिन में समुदाय के बीच रहकर काम करना चाहती थी। किसी ने बताया कि अमृत क्लिनिक में नर्स की भर्ती हो रही है। मैंने इंटरव्यू दिया और मेरा सलेक्शन हो गया। यहां जो ट्रेनिंग हुई, उसी में मैंने इस पेशे की बारीकियों को सीखा। अमृत क्लिनिक पर काम करते हुए बीमारी को पहचानना, इलाज करना और मरीज की सेवा करना शुरू किया। यहां लोगों से मुझे बहुत प्रशंसा मिलने लगी तो अच्छा लगने लगा।

मीरां ने इस पेशे से जुड़े कुछ किस्से बताए : घटेड़ क्लीनिक पर मैं काम कर रही थी, अचानक एक सीवियर एनिमिक पेशेंट आईं। वो गर्भवती थी और प्रसव होने वाला था। वजन मात्र 40 किलो। क्लीनिक आने के बाद वो बेहोश हो गईं। मैं घबरा गई, लेकिन हिम्मत नहीं हारी। आधा घंटे बाद प्रसव हुआ। बच्चे का वजन सिर्फ ढाई किलो ही था। मैनें हमारे डॉक्टर से बात की, उनके निर्देशों पर बच्चे और मां को दवाई दी। वो यहां से ठीक होकर गई, जब भी आती है दुआएं देती है।

इसी तरह बेड़ावल क्लिनिक पर एक दिन मैं अकेली थी। सीवियर डायबिटिक पेशेंट आया। पानी पीते ही यूरिन करने जाता। जांच की तो शुगर लेवल बहुत ज्यदा था। उसके पहले बीपी व शुगर की दवाई चल रही थी जो उसने एक साल पहले ही बंद कर दी थी। मैनें हमारे डॉक्टर से बात की। इंसुलिन देने के बाद भी शुगर कंट्रोल नहीं हुई। लगातार दवाई देने के 3 घंटे बाद उसकी शुगर कंट्रोल हुई। अब वो ठीक है।

बेसिक हेल्थकेयर सर्विसेज संस्था में कार्यरत प्रीति बताती हैं कि मीरा अत्यंत ईमानदार एवं मेहनती नर्स हैं। वो बहुत ही मिलनसार भी हैं। काम के दौरान मीरा को घटेड़ से बेड़ावल और फिर मानपुर भेजने की जरूरत पड़ी। मीरा ने यह सभी बदलाव बहुत ही सहजता से स्वीकारे एवं हर स्थिति में खुद को एडजस्ट किया।

मीरा बताती हैं कि उन्हें पढ़ना पसंद है। वो नर्सिंग के क्षेत्र में जो भी नया हो रहा है या किसी भी नर्स की पाजिटिव स्टोरी पढ़ना पसंद करती है। आने वाले समय के बारे में वो कहती हैं–जीवन में हमेशा काम करते हुए लोगों की सेवा करती रहें।

तू न थकेगा कभी, तू न रुकेगा कभी, तू न मुड़ेगा कभीः मिलिए अमृत नर्स सरीता महिड़ा से

वक्त और हालात कब बदल जाए ये कोई नहीं जानता लेकिन बहुत हद तक हमारी जिंदगी की दशा और दिशा इस बात पर निर्भर करती है कि हम बुरे हालात का सामाना कैसे करते हैं। अमृत क्लीनिक मानपुर में काम करने वाली नर्स सरीता महिड़ा की कहानी भी कुछ इसी तरह की है। वक्त और हालात से लड़कर सरीता ने अपनी जिंदगी को कैसे संवारा पढ़िए उनकी जुबानीः

बांसवाड़ा जिले के घाटोल में जन्मी सरीता एक शहरी माहौल में बड़ी हुई। परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति ने सरीता को शुरू से ही बेचैन करके रखा। स्कूल फीस भरनी हो या शादी ब्याह में जाना हो, पिता को लोगों से उधार लेना ही पड़ता और ब्याज भी चुकाना होता। जैसे तैसे 12वीं कक्षा पास की और घर वालों ने शादी करवा दी। परिवार वाले उन्हें पढ़ाना नहीं चाहते थे। लेकिन सरीता ने फिर भी कॉलेज में एडमिशन ले लिया। इसी बीच गांव की लड़किया नर्सिंग कोर्स का फार्म भर रही थीं तो उन्होंने भी भर दिया। परिवार वालों ने मना किया लेकिन उन्होंने ठान लिया था कि नर्सिंग तो करेंगी। गहने बेच कर दस हजार रुपए लाईं। खूब मेहनत की और उन्हें स्कॉलरशिप मिल गई। सैकंड ईयर में चालीस हजार फीस भरनी थी। अब पैसा कहां से लाए। वे पापा के घर गईं, उनके मिलने वाले से पैसे उधार लिए और फीस भरी। थर्ड ईयर में उधारी चुका दी। एक संस्थान में नौकरी की और कोर्स पूरा किया।

सरीता बताती हैं कि कोर्स पूरा करने के बाद के डेढ़ साल तक बेरोजगार रही। बांसवाड़ा में एक क्लिनिक पर काम किया, जहां डॉक्टर को फॉलो करना होता था, लेकिन जब से मैं यहां अमृत क्लीनिक में काम करने लगी हूं, मेरा आत्मविश्वास बढ़ गया है। मैं मरीजों की बीमारी पता लगा लेती हूं। उनका इलाज कर लेती हूं, और क्लिनिक को संभाल लेती हूं। फील्ड में जाकर बैठकें करना, लोगों को बीमारी के बारे में समझाना, इतने लोगों के सामने बोलना, यहीं आकर सीखा है।

सरीता ने अमृत क्लिनिक के कुछ खास अनुभव शेयर किए आप भी पढ़िएः मानपुर क्लिनिक पर एक महिला अपनी बच्ची को लेकर आई जो अतिकुपोषित थी और साथ ही उसे टीबी भी थी। रेफर किया तो घर वालों ने ले जाने से इनकार कर दिया। गांव में ले गए और भोपे से इलाज करवाने लगे। हम गांव में गए काउंसलिंग की तो सलूंबर ले जाने के लिए तैयार हुए। घर वाले भूखे थे हमने उनके खाने का इंतजाम कर सलूंबर भेजा। वहां से उसे उदयपुर रेफर कर दिया गया। लेकिन बच्ची की जान नहीं बच सकी। महिला का एक बेटा था जिसको भी पहले मगर मच्छ निगल गया था। बच्ची नहीं बच पाने का मुझे आज तक भी दुख है।

मानपुर में एक हाइपर टेंशन का मरीज आया। ब्लड प्रेशर इतना ज्यादा था कि मशीन से नापा ही नहीं जा रहा था। मैंने डॉक्टर को फोन किया। दवाइयां दी, इंजेक्शन लगाया। दो घंटे बाद बीपी नार्मल हुआ। अब वो शख्स ठीक है, जब भी क्लिनिक पर आता है दुआएं देता है। इसी तरह भरकुंडी का एक पेशेंट जिसके टीबी का इलाज चल रहा था। उसका इंफेक्शन बढ़ गया और फेफड़ों में पानी भर गया। हमने डॉक्टर से बात कर इंजेक्शन लगाकर, उसकी स्थिती को स्थिर किया, फिर उदयपुर रेफर किया, अब वो बिल्कुल ठीक है। लौट कर आने पर उसने कहा–आप लोग नहीं होते तो मैं मर जाता।

डॉ संजना बताती हैं कि पारिवारिक दिक्कतों के कारण सरीता ने महीनों तक काम छोड़ दिया था। लेकिन उसकी सीखने की ललक हमेशा मजबूत थी। उसने जल्दी ही काम को समझा और पैशेंट का इलाज करना शुरू कर दिया। वह हमेशा क्लिनिक को बेहतर बनाने की योजना पर काम करती हैं। वह अपनी बात को बेबाकी से रखती हैं। ऐसे कई उदाहरण है जब सरीता ने अपनी बात को बेबाकी से रखा तो हमें निर्णय बदलने पड़े।

सरीता बताती हैं कि उन्हें फ्री समय में कहानियां पढ़ना पसंद है और वे हर बार एक प्रेरणादायक स्टोरी पढ़ती हैं। इससे जिंदगी और आसान हो जाती है। उनका लक्ष्य आगे पढाई करना है। वे चाहती हैं कि नर्सिंग के क्षेत्र में जितने भी कोर्स है वे करें और लोगों की सेवा करती रहें।

समय के साथ जिसकी चमक बढ़ती जाती है, राधा उसी का नाम है

अगर आप में हौसला है तो आप कुछ भी हासिल कर सकते हैं। बस इंसान में सच्ची प्रतिभा और लगन होनी चाहिए, फिर कोई भी कठिनाई उसका रास्ता या उसके हौसले को मात नहीं दे सकती। अमृत क्लिनिक की नर्स राधा डिंडोर ने भी विपरीत परिस्थितियों में अपने हौसले को कम नहीं होने दिया। उसने रास्ता जरूर बदला, लेकिन मंजिल को हासिल करके दिखाया। राधा ने कुछ इस तरह सुनाई अपनी जिंदगी में स्कूल से लेकर नर्स बनने तक की कहानी।

डूंगरपुर जिले में सागवाड़ा के बिलिया बड़गांव में पली बड़ी राधा डिंडोर के माता–पिता खेतीबाड़ी करते हैं। परिवार में चार भाई व तीन बहनों में उसका पांचवां नंबर है। घर के पास ही स्कूल होने से आठवीं तक उसे ज्यादा परेशानी नहीं हुई, लेकिन आठवीं के बाद घर वालों ने दूर भेजने से इनकार कर दिया। राधा ने जिद की और हॉस्टल में एडमिशन ले लिया। चार साल वहां रही। उन्होंने बीए किया, फिर बीएड करतीं, लेकिन एमए संस्कृत में एडमिशन हो गया। मना करने के बाद भी उनकी शादी हो गई। पति बीए बीएड है और वे भी चाहते थे कि बीएड करूं, लेकिन मुझे नर्स बनना था। मैंने खूब मेहनत की और मेरा बांसवाड़ा के सरकारी कॉलेज में एडमिशन हो गया। खर्चे के लिए पति बाहर जाते और कमाकर लाते, उससे हम फीस भरते। इस बीच बच्ची हो गई। रातभर बच्ची को संभालती और सुबह पढ़ाई करती। जैसे तैसे वक्त निकला। कर्जदार भी हो गए। फिर सागवाड़ा के एक क्लिनिक में नौकरी की, जिससे कुछ राहत मिली।

अमृत क्लिनिक ने दूसरों की सेवा के साथ खुद को भी जीना सिखाया–चार साल से अमृत क्लिनिक में काम कर रही राधा बताती हैं कि अमृत क्लीनिक की ट्रेनिंग में ही बहुत कुछ सीखने को मिला। इससे पहले हम सिर्फ डॉक्टर जो कहता था वही करते थे। शुरु में पेशेंट को संभालना मुश्किल होता था, लेकिन अब पेशेंट को संभालने के अलावा उनकी बीमारी का पता लगाकर इलाज भी कर पाते हैं। हां डॉक्टरों से जरूर मार्गदर्शन लेना पड़ता है। यहां लोगों की सेवा करते हैं तो उनकी दुआएं भी मिलता है। यह पेशा ही सेवा और दुआओं का है। राधा ने भी अपने अमृत क्लिनिक के अनुभव शेयर किए। पढ़िए :–

गीता* एक डायबिटिक पेशेंट थीं। उसकी हालत इतनी खराब थी कि देखकर ही डर लगने लगा। पूछा तो पता चला कि कोल्ड ड्रिंक पीने से उसकी तबीयत बिगड़ी है। पहले से शुगर थी, उस पर उन्होंने दवाई देना भी बंद कर दिया था। इंजेक्शन लगाकर घंटों उसे निगरानी में रखा गया। शुगर कंट्रोल होने के बाद वो ठीक हो गई। अब वो यहां जब भी आती है झोली भरकर दुआएं देती है।

स्किन की बीमारी का पेशेंट देसू* के पूरे शरीर पर फुंसियां हो रही थी, उनमें पस पड़ा था। उसने कोई इलाज भी नहीं लिया था। हमने साफ सफाई की। डॉक्टर से मार्गदर्शन लेकर इलाज शुरू किया। सात दिन लगातार इलाज किया, तब जाकर वो अच्छा हुआ। लोहागढ़ की एक टीबी पेशेंट की तबीयत बिगड़ने पर भी वो इलाज के लिए राजी नहीं हुई। घर जाकर काउंसलिंग की लेकिन वो नहीं मानी। और ससुराल से पीहर चली गई। हमने पीहर जाकर उसे समझाया और दवाई चालू की। अब वो ठीक है।

अमृत क्लीनिक से जुड़ी मनीषा दत्ता ने बताया कि कई बार ऐसे मौके आए हैं, जब राधा ने अकेले ही क्लीनिक को मैनेज करना पड़ा है। ऐसी स्थिति में गंभीर या इमरजेंसी मरीज आने पर भी राधा ने उसे अच्छे से संभाला है। कोर्डिनेटर के रूप में नर्स के पास कई जिम्मेदारियां होती हैं। ऐसे में वो काम को अच्छे से मैनेज कर लेती है। उसने बहुत ही कम समय में डिलिविरी करना सीख लिया है। स्किल को भी सीख लिया। राधा फैमिली लाइफ और क्लिनिक को अच्छे से मैनेज करती है।

राधा डिंडोर का कहना है कि पढ़ाई करना ही उसका शौक है। जब समय मिलता है, वे कुछ न कुछ पढ़ाई जरूर करती है। नर्सिंग के क्षेत्र में जो भी नए कोर्स हैं वो करना चाहती हूं। साथ ही सरकारी नौकरी पाना उनका लक्ष्य है।

*व्यक्ति की गोपनीयता रखने के लिए नाम बदला गया है।

पैदल स्कूल जाना, लौटकर बकरियों को चराना, सोचा न था कि नर्स बनकर सेवा करुंगी

सेवामंदिर और बेसिक हेल्थकेयर सर्विसेज द्वारा संचालित कोजावाड़ा अमृत क्लीनिक में काम कर रही नर्स राधा मीणा खुश है कि वो नर्स बनकर लोगों की सेवा कर रही है। बचपन में जब आठ किमी तक पैदल चलकर स्कूल जाना पड़ता, लौटकर गांव में बकरियां चराने जाना फिर घर का काम करना, तब सोचा नहीं था कि नर्स बनकर लोगों की सेवा करेंगी। डूंगरपुर के देवल गांव में जन्मी राधा का बचपन अभावों में ही गुजरा। छह भाई बहनों में चौथा नंबर राधा का था। गांव की लड़कियों के साथ स्कूल जाना सीखा और मन नहीं लगने पर बंक मारना भी। एक बार जब स्कूल नहीं गईं तो मां ने दो थप्पड़ जड़ दिए, इसके बाद कभी स्कूल से बंक नहीं मारा। जेल में पिता की नौकरी लगने के बाद पिता दयाशंकर के साथ प्रतापगढ़ जेल के क्वार्टर में शिफ्ट हो गईं, वहीं दसवीं से बारहवीं तक कक्षा पास की। टीचर बनना चाहती थी इसलिए कॉलेज में एडमिशन ले लिया। इस बीच घर वालों के कहने पर जीएनएम की परीक्षा दी तो प्राइवेट कॉलेज में एडमिशन हो गया। कोर्स करने के बाद प्राइवेट अस्पताल में नौकरी की। साल 2017 में सेवामंदिर में फार्म भरा तो कोजावाड़ा क्लीनिक में काम करने का अवसर मिला।

राधा ने बताए इस पेशे से जुड़े कुछ अहम किस्से :– राधा बताती हैं–क्लीनिक पर मैं अकेली थी, तभी भूधर गांव का पेशेंट हकरा* आया, उसे हाईशुगर और हाइपरटेंशन था, जांच में शुगर 500 से अधिक थी। हमारी डॉक्टर से बातचीत कर हकराा को इंसुलिन दिया, लेकिन शुगर लेवल 300 से नीचे नहीं गया। ऐसे में इंजेक्शन और देना पड़ा। इसके बाद लंबे समय तक हमने उसे निगरानी में रखा। सुबह शाम क्लीनिक बुलाते, इंसुलिन देते, तब जाकर वो ठीक हुआ।

कोजावाड़ा में स्कूल के वार्षिक उत्सव में महेश* नाम का बच्चा अचानक बेहोश हो गया। उसकी उम्र 9 साल थी। बेहोशी की हालत में बच्चे की आंखें खुली थी। मैं उसे देखकर डर गई। बहुत गर्मी थी, मैंने हमारे डॉक्टर से बात की। ब्लड टेस्ट किया तो शुगर की बेहद कमी थी– शुगर लेवल 50 से कम था। एक घंटे तक उसे होश नहीं आया। एम्बुलेंस की व्यवस्था करवाकर बच्चे को रेफर किया तब राहत की सांस ली। इसी तरह दसवीं कक्षा की एक छात्रा गाड़ी की छत पर बैठी थी, और नीचे गिर गई। उसके सिर में गंभीर चोट लगी थी, और वो बेहोशी की स्थिती में थी। बच्ची को कोजावाड़ा लाए, जहाँ उसका प्राथमिक उपचार किया और फिर उसे रेफर किया। समय पर इलाज की वजह से बच्ची बच गई।

राधा के बारे में डॉ. संजना बताती हैं– अमृत क्लीनिक से जुड़ने के बाद राधा का आत्मविश्वास, उसकी दक्षता लगातार बढ़ती गई है। इस दौरान वह गर्भवती हुई, उसका बच्चा भी हुआ, पर उसके काम सीखने की लगन, और जोश हमेशा बना रहा। यही कारण था कि राधा अमृत क्लीनिक कोजावाड़ा की एक अनुभवी और मजबूत नर्स के रुप में जानी जाने लगी।

राधा बताती हैं कि सिलाई करना उनका शौक है और जब भी उन्हें समय मिलता है, वे सिलाई करती हैं। बच्चों के कपड़े सिलने के अलावा घर की जरूरतों की सामग्री भी तैयार कर लेती हैं। उनका एक ही लक्ष्य है कि वे हमेशा मरीज की सेवा करती रहें ताकि उन्हें यह अहसास न हो कि वो बीमार हैं।

*व्यक्ति की गोपनीयता रखने के लिए नाम बदला गया है।

खेतों में गोबर डालते रहे पर पढ़ाई नहीं छोड़ी इसलिए आज नर्स हूं

सेवामंदिर और बेसिक हेल्थकेयर सर्विसेज द्वारा संचालित कोजावाड़ा अमृत क्लीनिक में काम कर रहीं नर्स वीना रोत ने भी बचपन से लेकर पढ़ाई पूरी होने तक संघर्ष किया। पांच भाई बहन और पिता बेरोजगार। सोच सकते हैं परिवार किस दौर से गुजर रहा होगा। बुआ की लड़की स्कूल जाने लगी तो वीणा ने भी स्कूल जाने की ठानी। पढ़ाई करने के लिए 5 किमी हर रोज पैदल चलना। लौटकर खेतों में गाय व भैंसों का गोबर उठाना। घर के कामों के बीच शाम को वक्त मिलता तो होम वर्क करती। यही दिनचर्या थी। पिता सरकारी शिक्षक बने तो संघर्ष कम हुआ। अब भाइयों को प्राइवेट और हम बहनों को सरकारी स्कूल में दाखिला करवाया। बारहवीं पास करने के बाद कॉलेज में एडमिशन ले लिया, तभी मामी के लड़के ने जीएनएम का कोर्स करने की सलाह दी। वीना ने फार्म भरा और उसे नाथद्वारा नर्सिंग कॉलेज में एडमिशन मिल गया। यहां दुबारा संघर्ष शुरू हुआ। एक कमरे में आठ लड़कियां रहती थीं खाना भी ठीक से नहीं मिलता था। कोर्स पूरा होने के बाद उदयपुर में गितांजलि अस्पताल में नौकरी की। छह माह बाद अचानक तबीयत खराब हुई तो नौकरी छोड़कर गांव चली गई। स्वास्थ्य सही हुआ तो अमृत क्लिनिक के लिए आवेदन किया। उनका चयन हुआ, फिर ट्रेनिंग के बाद काम शुरू कर दिया। यहां काम करते हुए उन्हें दो साल हो गए हैं।

वीना रोत ने बताए इस पेशे से जुड़े कुछ अहम किस्से– वीना बताती हैं कि क्लिनिक पर एक दिन ढाई साल की एक बीमार बच्ची कविता* को उसके परिजन लेकर आए। उसे डायरिया था। मैंने इलाज शुरू किया तो बच्ची को तान आ गई। मैं डर गई। रेफर करना चाहा तो परिजनों के पास ले जाने के पैसे नहीं थे। बच्ची बेहोश हो गई। हमने उसकी खून की जाँच की, प्राथमिक उपचार दिया, और लोगों की मदद से बच्ची को रेफर किया। समय पर अस्पताल पहुंचने से उसकी जान बच गई। पूरा स्टाफ बेहद खुश हुआ।

वीना बताती है कि गांवों में लोग बंगाली डॉक्टरों के पास ज्यादा जाते हैं, जहां महंगी दवाई दी जाती है और इलाज भी नीम हकीम खतरे जान की तरह है। एक टीबी पेशेंट नानाराम* भी बंगाली डॉक्टर का इलाज ले रहा था, लेकिन उसकी तबीयत ठीक होने की बजाय बिगड़ती जा रही थी। फील्ड में हमें इस बारे में जानकारी मिली। उनसे बात करी तो नानाजी हमारे से झगड़ने लगा। हम लगातार उसकी समझाइश करते रहे तो उसे बात समझ आई। क्लीनिक पर आकर उसने दवाई लेना शुरू किया। अब वो एकदम स्वस्थ है। लोगों की इस तरह जान बचाना ही इस पेशे की सबसे बड़ी खुशी है।

बेसिक हेल्थकेयर सर्विसेज़ में कार्यरत अर्पिता बताती हैं कि वीना मरीजों को अमृत क्लीनिक तक लाने में अहम भूमिका निभाती हैं। वे डॉक्टरों से इलाज करना सीखने के साथ ही मरीजों की अच्छी देखभाल भी करती हैं। वे बताती हैं कि एक गर्भवती महिला को उसके परिजन अस्पताल नहीं ले जाना चाहते थे, उसकी हालत खराब थी। सर्वे के दौरान वीना को जब इस बारे में पता चला तो वो कई दिनों तक उसके घर गईं और परिजनों को समझाया और अंत में अस्पताल में ही उसकी डिलीवरी करवाई।

वीना बताती हैं कि उन्हें नई–नई किताबें पढ़ने का शौक है। जब भी वो फ्री होती है कोई न कोई किताब जरूर पढ़ती हैं। अखबार भी वो पूरी तरह पढ़ती हैं ताकि देश दुनिया के बारे में उन्हें सही जानकारी मिले। भविष्य में वीना सरकारी नौकरी में जाना चाहती हैं। इसके बाद उनका लक्ष्य पोस्ट बीएससी करने का है।

*व्यक्ति की गोपनीयता रखने के लिए नाम बदला गया है।